''श्री गणेशाय नमः''

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, डाईट, जोधपुर

सत्र : 2015-16

शोध-प्रतिवेदन (प्रभाग स्तरीय शोध)

विषय :- **उच्च प्राथमिक कक्षाओं (कक्षा-VI) के छात्रों में हिन्दी भाषा के उच्चारण एवं लेखन शुद्धि में श्रव्य साधनों के प्रभाव का समीक्षात्मक अध्ययन**

अनुसंधानकता

डॉ. मनीष त्रिवेदी **प्रदीप मोहन सिंह उदावत** **डॉ. अंजु भट्ट**

सेवारत प्रभाग, डाइट, जोधपुर (राज.)

जिला शिक्षा अनुसंधाता वाक्पीठ, जोधपुर

(जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, डाईट, जोधपुर)

शोध-प्रतिवेदन

विषय :- उच्च प्राथमिक कक्षाओं (कक्षा VI) के छात्रों में हिन्दी भाषा के उच्चारण व लेखन शुद्धि में अन्य साधनों के प्रयोग के प्रभाव का समीक्षात्मक अध्ययन।

अनुसंधानकर्ता

(डॉ. मनीष त्रिवेदी)	(प्रदीप मोहन सिंह उदावत)	(डॉ. अंजु भट्ट)
अध्यापक	व्याख्याता	अध्यापिका

मार्गदर्शक एवं संरक्षक

श्री विरेन्द्र सिंह शेखावत

प्रधानाचार्य, डाइट, जोधपुर

अनुक्रमणिका

क्रम संख्या	विवरण	पृष्ठ संख्या
1.	अध्याय–प्रथम प्रस्तावना शोध शीर्षक आवश्यकता एवं औचित्य उद्देश्य परिकल्पना	
2.	अध्याय–द्वितीय अनुसंधान अभिकल्प परीसीमन न्यायदर्श शोध उपकरण	
3.	अध्याय–तृतीय दत विश्लेषण	
4.	अध्याय–चतुर्थ निष्कर्ष सुझाव	
5.	अध्याय–पंचम् 1. परिशिष्ट 2. न्यादर्श सूची एवं उपकरण	

अध्याय–प्रथम

(प्रस्तावना)

- शोध शीर्षक
- आवश्यकता एवं औचित्य
- उद्देश्य
- परिकल्पना

शोध–शीर्षक

उच्च प्राथमिक कक्षाओं के छात्रों (कक्षा VI) में हिन्दी भाषा के उच्चारण एवं लेखन शुद्धि में श्रव्य साधनों के प्रभाव का समीक्षात्मक अध्ययन।

आवश्यकता एवं औचित्य

भाष्यते इति भाषा अर्थात् जो बोली जाती हैं, उसे भाषा जाता है। आचार्य पतंजलि के अनुसार 'व्यक्ता वाचि वर्णा येषां ते इमे व्यक्त वाचः'। अर्थात् भाषा वह साधन हैं जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचार दूसरों के समक्ष भली भांति प्रकट कर सकता हैं एवं दूसरों के विचारों को स्वयं स्पष्ट रूप से समझ सकता है। वस्तुतः भाषा में उच्चारण, ग्रहण एवं बोधगत समस्त विशिष्टताओं का समावेश रहता है।

भाषा का क्रमिक विकास कई चरणों में हुआ है। प्रारम्भिक काल में भाषा का स्वरूप संकेतात्मक था असभ्य एवं मानवीय वर्बर जीवन में लिपि चिन्हों का आविष्कार न होने से भाषा का प्रारम्भिक स्वरूप संकेतात्मक था एवं उस काल में मनुष्य विभिन्न संकेतों के माध्यम से अपने विचारों का आदान–प्रदान किया करता था। शनैः शनैः लिपि चिन्हों के अविष्कार के साथ ही भाषा का स्वरूप मौखिक हो गया हैं। जिसमें मनुष्य भाषा का उच्चारण करके अपने विचारों को

प्रकट करने लगा। यह भाषा के विकास की दूसरी परम्परा थी। इसी विकास क्रम में भाषा का तीसरा स्वरूप लिखित भाषा हुआ जिसमें विभिन्न लिपि चिन्हों को लिखित रूप दिया गया एवं मौखिक भाषा लिखित भाषा के रूप में परिवर्तित हो गई। लिखित भाषा के विकास के साथ ही साहित्य को लिखित रूप दिया जाने लगा। वर्तमान युग में भाषा का यांत्रिक रूप प्रचलित हो गया जिसमें भाषा को विभिन्न श्रव्य एवं दृश्य साधनों जैसे– रेडियो, टेपरिकार्डर, प्रोजेक्ट, मोबाईल आदि में संचारित किया जाने लगा है।

किसी भी भाषा के चार मूल कौशल होते है – सुनना, बोलना, पढना एवं लिखना। वस्तुतः किसी भी भाषा का आदान–प्रदान अमूर्त रूप में सुनकर एवं मूर्तरूप पढ़कर होता हैं एवं प्रदान अमूर्त रूप में बोलकर एवं मूर्त रूप में लिखकर होता है।

भाषाओं की परम्परा में 'हिन्दी भाषा' हमारे देश की राष्ट्रीय भाषा हैं एवं उत्तरी भारत में हमारी शिक्षा एवं विचारों के आदान–प्रदान का सर्वोत्तम माध्यम हिन्दी भाषा हैं। अतः हिन्दी भाषा शुद्धातिशुद्ध उच्चारण एवं लेखन अत्यावश्यक हैं।

शैशवावस्था में बालक की प्रथम पाठशाला उसके माता–पिता एवं परिवार होता हैं किन्तु इस स्तर पर शिशु को भाषिक ज्ञान नही होता। बाल्यावस्था में शिशु की प्रथम पाठशाला उसका विद्यालय होता हैं अतः इस स्तर पर छात्र को जो सिखाया जाता हैं, वह ज्ञान उसके लिए प्रथम एवं स्थायी बन जाता हैं।

प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर पर हिन्दी भाषा के लेखन एवं उच्चारण सम्बन्धी अनेक समस्याओं को दृष्टिगत किया जाता हैं। जिसके अन्तर्गत ग्रामीण क्षेत्र की स्थानीय बोलियों का प्रभाव, आशुद्ध अनुकरण, प्रान्त विशेष में उच्चारण सम्बन्धी विकार, क्षित्रता, मनोवैज्ञानिक दोष जैसे संकोच, भय, विलम्ब इत्यादि, अध्यापक का अशुद्ध उच्चारण, ज्ञान का अभाव, समान क्रम की ध्वनिया एवं शिक्षकों की कमी इत्यादि है। यदि इन समस्त कारणों का

पर्यालोचन किया जाए तो एक सबसे बड़ा कारण सरकारी विद्यालयों में शिक्षकों की कमी हैं। ऐसी परिस्थिति में शिक्षा के क्षेत्र में शैक्षिक तकनीक का प्रयोग कक्षा–कक्ष की प्रक्रिया में शिक्षक का विकल्प प्रस्तुत किया जा सकता है एवं शैक्षिक तकनीक का प्रयोग करके अधिगम की परिस्थितियों को उत्पन्न करके अधिगम के उद्देश्यों को प्राप्त किया जा सकता हैं।

हिन्दी भाषा में भी विभिन्न शैक्षिक तकनीक जैसे श्रव्य साधन रेडियो, टेपरिकार्डर इत्यादि के प्रायेग के माध्यम से अधिगम को प्रभावी बनाया जा सकता हैं। हिन्दी भाषा के शुद्धानिशुद्ध उच्चारण एवं वर्तनी लेखन की शुद्धि के विषय में श्रव्य साधनों का (मोबाईल आदि) का प्रयोग कर अधिगम को प्रभावी क्रिया जा सकता है।

वर्तमान समय में शिक्षा के क्षेत्र में कई शोधकार्य हो रहे हैं तथा कई नवाचारों का विकास हुआ हैं एवं इसके विद्यालय प्रशासन में कई संचार साधनों का प्रयोग कर छात्रों के कार्य–निष्पत्ति में सुधार लाने एवं निश्चित लक्ष्यों की प्राप्ति में भी इसका प्रयोग किया जाता हैं। अतः हिन्दी भाषा में भी मोबाईल में श्रुतलेख के संधारण एवं पाठ–आकृति के माध्यम में कक्षा–कक्ष की प्रक्रिया में बिना शिक्षक के ही शिक्षण कार्य अधिक प्रभावी ढंग से सम्पन्न हो सकता है एवं छात्र के लेखन एवं उच्चारण क्षमता में सुधार हो सकता है अथवा उसकी बौद्धिक अधिकतम् क्षमता में कितनी वृद्धि की जा सकती है। यही जानना इसी शोध का उद्देश्य है।

उद्देश्य :-

1. उच्च प्राथमिक कक्षाओं के विद्यार्थियों में मोबाईल में (श्रव्य साधनों) श्रुतलेख के द्वारा पडने वाले अधिगम के प्रभाव की समीक्षा।
2. छात्रों को हिन्दी भाषा के शुद्धनिशुद्ध उच्चारण कौशल को विकसित करने का प्रयास करना।

3. छात्रों को शुद्ध लेखन हेतु प्रेरित करना।
4. छात्रों में पाठ सुनने की प्रवृत्ति के द्वारा एकाग्रचितता का विकास करना।
5. छात्रों की पश्च उपलब्धि ज्ञात करना।

परिकल्पना

1. उच्च प्राथमिक कक्षाओं के छात्रों (कक्षा VI) में श्रव्य साधनों के प्रयोग के माध्यम से हिन्दी भाषा के शुद्ध उच्चारण एवं लेखन में आने वाली बाधा को दूर किया जा सकता है।
2. उच्च प्राथमिक कक्षाओं के छात्रों में श्रव्य साधनों के प्रयोग के द्वारा एकाग्रचितता का विकास किया जा सकता है।
3. उच्च प्राथमिक कक्षाओं में श्रव्य साधनों का प्रयोग शिक्षक के विकल्प के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है।

अध्याय–द्वितीय

(अनुसंधान–अभिकल्प)

- परिसीमन
- न्यादर्श
- उपकरण
- विधि

परिसीमन

शोध के दत्त संकलन हेतु जोधपुर जिले के 10 विद्यालयों का चयन किया गया है, जिसकी विवरण तालिका निम्न है –

क्र.सं.	विद्यालय का प्रकार	विद्यालयों की संख्या
1.	उच्च माध्यमिक स्तर (कक्षा VI)	3
2.	उच्च प्राथमिक स्तर (कक्षा VI)	7

विद्यालय का प्रकार :–

उच्च माध्यमिक स्तर = 30 %

उच्च प्राथमिक स्तर = 70 %

न्यादर्श

चयन विधि – शौउद्देश्य यादृच्छिक विधि

आकार

(अ) 1. उच्च माध्यमिक विद्यालय – 3

2. उच्च प्राथमिक विद्यालय – 7

(ब) 1. शहरी विद्यालय – 3

2. ग्रामीण विद्यालय – 7

(स) 1. संस्था प्रधान – 10

2. विद्यालय – 10

शोध-उपकरण

1. मोबाईल (श्रुतलेख) – शिक्षक
2. टेपरिकार्डर (श्रुतलेख) – शिक्षक
3. लेखन प्रपत्र (छात्र) –

अध्याय-तृतीय

दत्त–विश्लेषण

दत्त संकलन हेतु कुल उपकरणों का प्रयोग किया गया है, जिसका विवरण निम्न है :–

क्र.सं.	उपकरण क्रमांक	उपकरण का विवरण
1.	1	मोबाईल
2.	2	टेपरिकार्डर
3.	3	छात्र लेखन प्रपत्र– शाब्दिक छात्र वाचन प्रपत्र– शाब्दिक

दत्त संकलन एवं विश्लेषण

प्रतिदर्श विद्यालयों में उपकरणों के माध्यम से प्राप्त दत्त विश्लेषण निम्न बिन्दुओं के आधार पर किया गया :–

1. विद्यालय के छात्रों में मोबाईल अथवा टेपरिकार्डर में 2 श्रुतलेखों का संधारण किया गया एवं इसकी 3 बार क्रमशः आवृत्ति की गई तथा प्रतिदर्श विद्यालयों के छात्रों श्रुतलेख लिखने के लिए कहा गया एवं अन्त में उन्हीं उपकरणों के माध्यम से शब्दों के शुद्ध एवं अशुद्ध रूप का विवेचन किया गया एवं उनसे प्राप्त विवरण एवं वाचन एवं लेखन प्रपत्र को तालिकाओं में निर्दिष्ट किया गया।

श्रुतलेख संख्या – 1 (3)

गाँधी जी ने कहा ''मनुष्य के मानसिक विकास के लिए मातृभाषा उतनी ही आवश्यक है जितना कि बच्चे के शारीरिक विकास के लिए माता

का दूध आवश्यक है। बालक पहला पाठ अपनी माता से ही पढता है, इसलिए उसके मानसिक विकास के लिए उसके ऊपर मातृभाषा के अतिरिक्त कोई दूसरी भाषा नही लादी जा सकती है।

श्रुतलेख संख्या – 2 (4)

सत्य का मार्ग सरल नही होता एवं सत्य के मार्ग पर चलने के लिए दृढ़ संकल्प आवश्यक होता हैं। इसके लिए व्यक्ति को कुछ समय के लिए हानि उठाने के लिए तैयार रहना चाहिए। सत्य का मार्ग अपनाने के लिए सत्य एवं लालच का परित्याग करना चाहिए। समस्त महापुरूषों के जीवन से यही पता चलता है कि उन्होंने सत्य के मार्ग को अपनाया।

2. मोबाईल एवं टेपरिकार्डर के माध्यम से उच्चारित किए जाने वाले शब्दों की सूची –

क्र.सं.	**शुद्ध**	**अशुद्ध**
1.	कृषि	करषि
2.	क्रम	करम
3.	भ्रम	भरम
4.	कार्य	कारय
5.	कर्ता	करर्ता
6.	आशीर्वाद	आशीरवाद
7.	विद्यालय	विधालय
8.	स्कूल	इस्कूल
9.	औरत	ओरत
10.	गद्यांश	गद्याश
11.	पद्धति	पदति
12.	समृद्ध	समरध

उपर्युक्त श्रुतलेख एवं शब्दों के उच्चारण का प्रयोग मोबाईल एवं टेपरिकार्डर की रिकार्डिंग के माध्यम से

तालिका–3 के अनुसार

(श्रुतलेख में अशुद्ध लेखन वाले शब्द)

क्र.सं.	अशुद्ध लेखन वाले शब्द			
श्रुतलेख क्रमांक–1	1. गॉधी	2. मनुष्य	3. मानसिक	4. मातृभाषा
	5. आवश्यक	6. जितना	7. दूध	8. इसलिए
	9. अतिरिक्त	10. दूसरी		
श्रुतलेख क्रमांक–2	1. मार्ग	2. दृढ	3. संकल्प	4. आवश्यक
	5. व्यक्ति	6. कुछ	7. हानि	8. तैयार
	9. चाहिए	10. परित्याग	11. महापुरूषों	

तालिका–3 के अनुसार

(टेपरिकार्डर एवं मोबाईल के माध्यम से श्रुत श्रुतलेख में अशुद्ध लेखन वाले छात्रों का प्रतिशत)

क्र.सं.	अशुद्ध लेखन वाले विद्यार्थियों का %	विद्यालयों की संख्या
1.	0 - 20 %	2
2.	21 - 40 %	2
3.	41 - 60 %	2
4.	61 - 80 %	3
5.	81 - 100 %	1
		10

तालिका–4 के अनुसार

(अशुद्धोच्चारण वाले छात्रों का %)

क्र.सं.	अशुद्धोच्चारण वाले विद्यार्थियों का %	विद्यालयों की संख्या
1.	0 - 20 %	-
2.	21 - 40 %	-
3.	41 - 60 %	2
4.	61 - 80 %	2
5.	81 - 100 %	6
		10

प्रभाव :– विद्यार्थियों में हिन्दी उच्चारण एवं लेखन कार्य के लिए श्रव्य साधनों का प्रयोग अत्यन्त सचिकर रहा एवं टेपरिकार्डर एवं मोबाईल ध्वनि के माध्यम से कुल प्रतिदर्श के 90 प्रतिशत छात्रों के द्वारा बड़ी एकाग्रचितता से श्रुतलेख सुनकर कार्य किया गया।

अध्याय–चतुर्थ

- निष्कर्ष
- सुझाव

निष्कर्ष :–

1. कुल प्रतिदर्श के 90 प्रतिशत छात्रों के द्वारा टेपरिकार्डर एवं मोबाईल ध्वनि को सुनकर एकाग्रचितता से बिना शिक्षक के कार्य किया गया।
2. कुल प्रतिदर्श के 100 छात्रों के द्वारा हिन्दी भाषा के श्रुतलेख का शुद्ध लेखन किया गया।

3. कुल प्रतिदर्श 100 छात्रों के द्वारा इस माध्यम में शुद्ध वाचन किया गया।

4. कुल प्रतिदर्श में 95 प्रतिशत छात्रों को यह कार्य रोचक लगा।

<u>सुझाव</u> :– उपर्युक्त शोध उच्च प्राथमिक कक्षाओं के हिन्दी विषय के छात्रों के शुद्ध लेखन एवं उच्चारण के लिए शिक्षक के विकल्प के रूप में किया गया एक उद्देश्यपूर्ण प्रयास है जिसके माध्मय से श्रव्य साधनों का प्रयोग कर हिन्दी भाषा शुद्ध लेखन एवं शुद्दोच्चारण करवाया जा सकता हैं।

- आधुनिक काल वैज्ञानिक युग हैं तथा इसमें पठन–पाठन गतिविधियों का स्तर उन्नत करने की दृष्टि से कक्षा–कक्ष आधारित गतिविधियों को एक घटक के रूप में वीडियो पाठों के साथ समेकित किया जा सकता है।

- वीडियो पाठो के द्वारा शिक्षार्थियों को बड़ी संख्या में एक साथ उनकी सहायता के अधिगम की प्रभावशालीता को बढ़ाया जा सकता हैं।

- यह बिना शिक्षक कक्षा–कक्ष में अधिगम प्रक्रिया का सर्वोत्तम विकल्प है।

न्यादर्श सूची :-

क्र.सं.	विद्यालय का नाम	पदस्थापन स्थान
1.	रा.उ.मा.वि. केतू मदा	सेखाला
2.	रा.उ.मा.वि. केतू कला	सेखाला
3.	रा.उ.मा.वि. भालू अनुपगढ़	सेखाला
4.	रा.उ.प्रा.वि. केतू नाका	बालेसर
5.	रा.उ.प्रा.वि. केतू कला	बालेसर
6.	रा.उ.प्रा.वि. चांदपोल नम्बर–।	जोधपुर
7.	रा.उ.प्रा.वि. कोतवाली	जोधपुर
8.	रा.उ.प्रा.वि. बालेसर	बालेसर
9.	रा.उ.प्रा.वि. रतनसिंह की ढ़ाणी	बालेसर
10.	रा.उ.प्रा.वि. शक्तिनगर पावटा	जोधपुर शहर

उपकरण - 2

मोबाईल / टेपरिकार्डर – रिकार्डिंग – मोबाईल

1. श्रुतलेख संख्या – 1
2. श्रुतलेख संख्या – 2
3. शुद्ध–अशुद्धोच्चारण वाले शब्द –

श्रुतलेख अवलोकन प्रपत्र

विद्यालय का नाम :– ..... शोधकर्ता :– .....
पंचायत समिति – बालेसर, जोधपुर शहर।
छात्र का नाम :– .....
कक्षा – VI
दिनांक – सत्र 2015–16
श्रुतलेख संख्या – 1
श्रुतलेख संख्या – 2

शब्दोच्चारण प्रपत्र

विद्यालय	:	उपरोक्त 10 विद्यालय	शोधकर्त्ता
पंचायत समिति	:	बालेसर, जोधपुर शहर	1. डॉ. मनीष त्रिवेदी
छात्र का नाम	:	10 विद्यालयों के छात्र	2. श्री प्रदीप मोहन सिंह
कक्षा	:	VI	3. डॉ. अंजु भट्ट
दिनांक	:	सत्र 2015–16	

क्र.सं.	शुद्ध पूर्व वर्णित एवं अन्य शब्द	अशुद्ध पूर्व वर्णित एवं उनके अशुद्ध शब्द
1.	कृषि	करषि
2.	क्रम	करम
3.	भ्रम	भरम
4.	कार्य	कारय
5.	कर्ता	करर्ता
6.	आशीर्वाद	आशीरवाद
7.	विद्यालय	विधालय
8.	स्कूल	इस्कूल
9.	औरत	ओरत
10.	गद्यांश	गद्याश
11.	पद्धति	पदति
12.	समृद्ध	समरध